

4474 "

वन्दे कीरम्

さんさんさんさくさんさんさん

युवाचार्यादि-पदोत्सव

बीर्वेहिया हैय प्राप्त । <u>ब</u>ीर्जान्स ।

श्री साधुमार्गी देन पूज्य श्री हुक्मीचंद्र जी महाराज का समाज-टितैपी-श्रावक मंडल मन्दसौर [मालवा]

प्रथमावृत्ति] (००००

मृल्य चार ञ्चाने

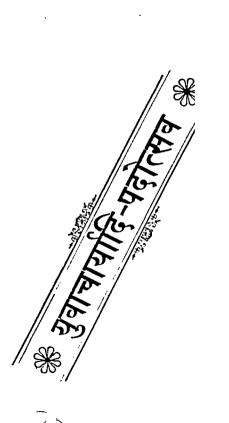
274242424242424242

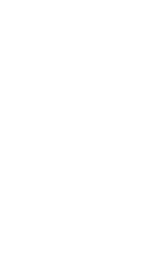
वीरान्द २५६१











युवाचार्यादि-पदोत्सव।

पत्तपातो न मे फक्षिस है पोप्यविषयते । युक्तिमद्वचनंयतु तदेवेह निवष्यते ॥ पूर्व विवरण

धी साषुमार्गा-समाज का अन्युद्य-काल निकट आपा तो चारों ओर से आवाज उठने लगी कि 'साषु-सम्मेलन अवस्य होना चाहिए।' इसी उद्देश्य से विभिन्न सम्प्रदायों के मुख्य-मुख्य नेताओं का एक उप्युटेशन (प्रतिनिधि-मण्डल) सभी सम्प्रदायों के पृष्ट्यों एवम् मुख्य साधुकों से मिला और अजमेर में एकव होने के लिए उनसे अनुनय-विनय की। पृज्य थी मन्नाजात जी महाराज को खास कर कहा गया कि आपको वहाँ अवस्य प्रधाना चाहिए। इसीलिए सन्तों ने पृज्य थी को अपने कन्धों पर उज्जया और उन्हें अजमेर के समारोह में



वातवर वान् कर दिया था। वय अवनेर के श्रीव खरवा पहुँचे नो होनों पूजों का एक मन्तिर में वार्तातार हुआ। अना में समय की कोई योजना तय न हुई। तय पूज्य भी अमीतर्स खरि की राजावधानी की कि बातवर खी, पूज्य भी कारी-राम भी महाराज धादि ने यह बात सुमाई कि किसी को मध्यस्य मुकर्र किए दिना समर होना कठित है। इस पर उपर्युक्त मुनियान और मिरितात जी महाराज—मों इन पांच मुनियों को होनों और से मध्यस्य बनाया गया। और निम्म-प्रकार से प्रतिका पत्र तिस्स दिया गया—

प्रतिज्ञा-पव

संबद् (६६० वैत्र मुक्ता ४ एकवार स्पन्न खग्बा । व्यावर के पार)

होतों पृत्य पृत्य भी महाजात वो महागा हों। पृत्य धी वक्टरतात वो महप्रव काने जाने पत के होंगों का निप्त-कार करने के तिय होगों पत के होंगों भी- निधि और पक सर्पव देंसे पांच साधुओं को पत कमिटी नियन करने हैं। इस महालाववी मार्च वर्ष है— पृत्र हमारे त्वाववें मार्च वर है— (१) पूज भी कमोत्तक क्षित्रीमा (१) मार्थ महाजात वी मार् (१) कदिवर्ष धी नामवेंद्र वी मार्च (१) , , , रान्तवन्द वी , , सर्पव—

सराय-पुरामार्प भी स्क्रीतम डी महाराज



उस भोली को पून्य भी श्रामोलख ऋषि जी महाराज, रातावधानी पंडित मुनि भी रतनवन्द जी म०, कविवर्य पंडित मुनि
भी नानवन्द्र जी म०, पून्य भी काशीराम जी म०, उपाध्याय जी
भी सात्माराम जी म०, गर्जि भी उद्यवन्द्र जी म०, पंडित
भी मणीलाल जी म०, युवाचार्य भी नागचन्द्र जी म०, पंठ
मुनि भी छगनलाल जी म०, पं० मुनि भी माणकचन्द्र जी म०,
शौर पंडित मुनि भी रामकुँवार जी म० शादि २ प्रसिद्ध,
विद्वान् शौर वक्ता मुनिवरों ने भी श्रपने कंभों पर उठाने का
सौभाग्य प्राप्त किया था। इस विशाल मुनि-समुद्दाय का प्रवं विराद् मानव-नेदिनी का जुल्स जिस समय श्रजर-श्रमसुरी
श्रजमेर के मध्य पाज़ारों में होकर निकल रहा था उस समय
की शोना का दश्य पढ़ा ही मनोहर श्रोर श्रमिराम था। जिसकी
सुन्दरता का कुल टश्य पाठकगण इसी पुस्तक में चित्र द्वारा
श्रवलोकन करेंगे।

्र कुछ दिनों के याद मध्यस्थ मुनियों ने सम्प के सम्यन्ध में भूतकालीन फैसला दिया। यह इस प्रकार है—

भृतकाल का फैसला

सम्बत् १६६० चैत्र सुदी १३ शुक्रवार के रोज धी श्रजमेर में दोनों पूज्यों की तरफ से नियत की हुई कमिटी, दोनों तरफ के पुरावे देख कर य उनकी यायत परस्पर पूछ-ताझ कर, नीचे



को पृथ्य भी महालालजी महाराज ने क्योबार किया। प्योंकि पेयों को लिख कर तहरीर दे ही भी कि द्यार जो करें पह हमें मन्त्र है। शर्मा पात को कायम राक्त्र के लिए पृथ्य भी महारखाजी महाराज ने, तार्यने हक में न होते हुए भी, भृतकाल के पैताले को मन्त्र किया। हम पैताले में पैवों ने दोनों द्यायार्थों को येतार्यनी ही, कि बारह सरमीय का निर्देष सायस ही में क्य कर लें। लेकिन शायल में तय गर्टा हुला। स्वत्रप्य पश्यों ने किर निम्नलिधित लेकी स्थान पृथ्य भी महालाल जी मर के पात में की:—

ध्यज्ञमेर ला०१६४−३३

पुरव थी संपातात ही सहाराज.

22.24.5

भाग दोनो पूज्यों में पंचलाते में लिय दिया है। कि "मूत-बाल का निर्माय हो जाने के बाद माविष्य के लिय दानहें से मीम, मक मुखाबायें, एक जरान्याय, ब्यादि का निर्माय पत्था बरेंगे सी देनों की मीजा करना पड़ेगा! देना हित्या है। इस निर्माय के अनुसार, मिल्य का पंचला हेने का पंची की बार्यवाना दिया है। जिससे बाद गाम (बार बर्ज) तक दानी द्वार पत्थान जिस की मीविष्य का पंचला कर से । बादि नहीं दिया नी मायनाने की सावा की ब्राह्मणूट मीविध्याकार की विषय में पत्था



पुरुषों की सीजुद्गी तक दोनों पुरुषों की रहेगी। सीर पक कार्यार्थ रहने पर पक सामार्थ की होगी।

् (६) फॅलला मिलने के साथ परस्यर घारद सम्मोग खुला करें।

> दः भ्रमोतान ऋषि दः मुनि मस्ति। दः मृनि सन्तरात् दः मृनि नानचन्द्र दः मृनि कारीसम

रस प्रकार का फैसला मिलने ही पूज्य थी जमहरलात जी महापक का द्वरप हुएं के सारे पालाँ बहलने लगा. पर्वोक्ति इतकाल का फेल्पला तो उनके हक में रहा ही, भविष्यकाल 🗅 पै.पटा भी उन्हों के इक से रहा। दक्षि पह अविष्यकल 🖪 फैनला और संस्टा रहा । सुषाचार्य भी चएना और चेले दी सद सदने। भला धाद प्रया हमी रही ! दवास एवं के गर् पृत्य भी समालातको सहागत के माधुको का भीन्त्राच भी नहीं गहेगा। पयोजि होने घाले सह बेले गहेहीलात जी के रोंगे-रंदों ने देसा फैनला विचा । इस फैनले ने पूछा औ जगदरलाय की सहाराज के दिल से हमें की पक वहीं सारी हारहुर्ग पैरा का हो। देवों ने भी सीवा, कि वाहे वह नवाद ही या सन्याय, यह नियम हत या लागू बन हैं से इसा तियम के बत पहने पर किर इस प्रापनी सम्मारायों में किसी की भेते वहीं बनते हैंये. इस यद कारों कारों सरदार के इस्से हे होते ।



प्रिय पाठक, एक जगह सम्भोग और दूसरी जगह नहीं:-अजमेर में सम्भोग और व्यावर में नहीं ! यह क्या जैन सिद्धा-न्तानसार न्याय है ? नहीं, ऐसा करना श्राचार्य के लिए कलंक की बात है। 'पर समस्य को नहिं दोप गुसाई' के नाते पूज्य जवाहरलाल जी को कौन कहे ? उघर सत्याप्रही मुनि मिश्रीलाल जी कहते हैं कि जय अजमेर में सम्भोग हो गया श्रीर यहाँ नहीं होगा तो में धपना सत्याग्रह नहीं होड गा। श्रन्त में समाज के नेता एक डेप्युटेशन के रूप में हुए श्रीर उन्होंने दोनों पूट्यों तथा बहुत से मुनियों को एक जगह एकत्र किया। बढ़ें। पर पंचों के दिए इस फैसले की उपेद्मा कर फिर नवीन फैसला दिया गया। यदि कोई यों कहे कि मुनियों का दिया हुआ फैसला रह नहीं किया गया तो हमें उसकी समक पर तरस शाता है। क्योंकि जय वह फैसला रट्ट नहीं था तो फिर उस फैसले की शर्ती को तीसरे फैसले में टोहराने की प्या जरूरत थी ? श्रावश्यकता तो इस वात की थी, कि सभी जगह सम्भोग खोलने की शर्त ही स्वीकार कगई जाया वस यही शर्त ही केवल अमल में नहीं लाई गई थी। सभी शर्ती को फिर से अन्य फैसले में दोहराना पहले के फैसले को रदद करना है।

दर श्रसल में यात यह थीं, कि शुवाचार्य-परोस्सव की चिन्ता सता रहीं थीं। उसकी तिथि निश्चित करानी थीं। तीसरे फैसले को देख कर यस यह यात साफ मालुम पड़ जाती।





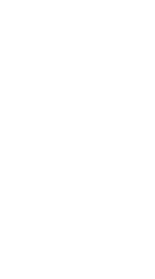


हैं। एएनु जो सरपंच नियत करने में एकमत न हो तो थीं बरदभाख जी सा॰ पितल्या तथा थीं सीभागमत जी साहया मेहता ये होनों साथ मिल कर मतभेद का समाधान कर हैं। इन में भी मतभेद रहे तो दोनों कृहस्यों ने सीलयन्द कथर भे सिडेएट सा॰ को दिया है। उस में लिये हुए नामयाला पंच दोनों गृहस्यों के सरपंच के तीर पर जी निर्चय देवे सी खन्तिम समभा जाय।

- (३) मुनि धी गरेशताल की महाराज की युवाचार्य-पद तथा मुनि धी पृथचन्द की महाराजकी उपाध्याय-पद संव १६६६ के फागुण सुदि १४ पहिले देने की किया होना निश्चित किया है।
 - (४) फागुम सुदि १४ के बाद नय शिष्य हों, वे गुवाचार्य भी की नेसमय में रहें।

उपरोक्त ठद्दराय कोल्यतेन्स के में सीडेंटर साथ भी हेमचल्द भाई नथा डेप्युटेशन के सुद्दरण भीर साधु-सम्मेतन में पथते हुए मृतिगाओं के समझ पह सुनाया है। पीर सभी ने सर्वा-सुमन से स्पीतन दूरमाया है।

एन प्रधार के पैसते को प्रपत्ने इक में न होते हुए भी, पृत्य भी मधातात जो महाराज ने संघ की शान्ति के लिए न्यांकार किया और प्यापर में बातुमींस काने के लिए खड़ानेर में पिरार कर दिया। पृत्य डवाहिस्तात डी महाराज ने खड़ानेर से उद्देश्वर बातुमींस के लिए बिहार कर दिया। पृत्य मधान



होनों सम्प्रदायों पर फैसले के श्रनुसार हो जाती तो फिर वे धारा-धोरण गाँधने की बात हो फ्यों कहते ? क्योंकि दोनों सम्प्रदायों पर जब उनका पूर्ण श्रिधकार हो गया तो फिर धारा-धोरण जीज़ ही फ्या थी। श्रतपत्र पूज्य जवाहिरलाल जी मथ का यह कथन करना ही इस बात का धोतक है, कि वे श्रमी में सम्प्रदायों के पूर्व श्रिकारी नहीं हुए हैं।

त सम्बद्धाय पर पूर्व आजनात निवाहित है है । जब बातुमील के अवसर पर में लिटेग्ट उद्युपर होते हुए ।यर आप थे। मुनि थी बायमलजी महागज ने उनकी कहा कि हमारे पृत्य का स्वगंवाल हो। गया; अतः हम सय मुनि तुमील हुएँ होते हो स्थविर थी नेदललजी महाराज के पाल हुँचैं। । हुन्य जबाहिरलाल जी महाराज का भी यही फर्ज है

हुचन । पूर्व द्यादिन्ताल का महाराज का मा यहा का ह ह यह यथा शीव रतलाम पहुँच कर स्थविर महाराज को अध्यक्त हैं निवस-स्थितियम भी दहीं हहेंगे।

त्रवासन दें नियम-उपनियम भी वहीं वहेंगे।

यार्तिक माल में उर्यपुर से पृत्य जयाहिग्लाल जी मन् त सार्देश द्यापा कि चानुमांस की समान्ति पर मुक्त से गिगपुर में मिलें। मुनि थीं चौथमलती महाराज ने उत्तर दिया के गंगापुर में प्रथम ती घर थोड़े हैं। दूसना, कोई वहाँ धाना-जाना चाहे तो उसके लिए स्टेशन से गंगापुर यहुन दूर पड़ेगा। घता मिलना तो चित्तींद में ही गर्के यह म्यान दोनों यानों के चनुक्त मी है। पर कार्निक गुस्ता = को. इन्दींग निवासी थीं रिखरचन्द्रों कड़ादत के झाना, पूज्य उदाहिग्लाल जो मन्ते यह समाचार भिज्ञाया कि चित्तींद में तो हो पड़े



साम्प्रश्चिक सम्बन्धी धाराधोरच श्रादि तो थीमान् स्वविर पेंडित मुनि भी १००= भी नन्दताल जी महाराज साहय की मेवा में रतलाम हाँ होना उचित होगा। पर्योक्त स्वर्गीय पूज्य थीं १००= थी महालात जो महाराज साहर की भी यही इच्छा थी। और स्वीवर महाराज सा॰ की भी यही रच्छा है। रमीतिष सभी स्थानों के मुनियों को रतलाम बुलाने के समा-यार प्रसें से हा चुके हैं। होर बड़े महाराज की पढ़ायस्या के हाएए धीमान सुबबन्द जी महाराज साहद उनकी सेवा पोइना नहीं चादने हैं। धीर शीमान् सुरवन्द जी म॰ का शर्पर भी कमजारी धादि शागिरिक कारडों में शेव नहीं रहता है। रस दास्ते साम्बदायिक सम्बन्धा विचार-विनिमय तो थीमान पटे महाराज की सेवा में रतलाम में होने में विशेष सुविधा रहेगी । यह धान पहले भी धीमान वर्षमान शी पित्रहोया रतलाम याला की मार्फत पुरुष भी को खेवा में। सर्व पर्नारं या पुरी है। मी बार यह उसका नर हालात पूज्य महायज साः की सेवामें क्षर्त कर दिखें। यंग्य सेवा लिखें।

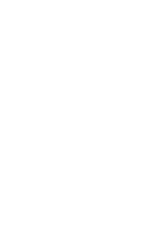
सारा--

बार्मत टोडरवात

रारपुर में पूरव जवादिरतातजी महायज के जा समाबार रनतान गये थे ये इस प्रधार हैं:—

Li

सिद्ध थीं रतहाम ग्रुम हवात सर्वे ।मा मोली थी पर्वमान







के निवासियों की प्रार्थनाओं को स्वीकार न करते हुए उप्रता से **क्टूकर निम्बाहें हैं की श्रीर आ हो रहे थे। यहाँ तक की एक साधू** भी जोरों से बुखार द्वाना था तो भी वे उनकी बुखार की हातते में भी विद्यार करने हुए पधार रहे थे। मगर मार्ग में ज्वर ने शोर पकड़ा तब गंगापुर रास्ते में पड़ा तो बढ़ां पर श्रीपधोप-चार के तिय मुनि थीं को उद्दरना पड़ा। वहाँ पर पूज्य थीं के समाचार झाये तो उनको समाचार करवा दिये थे कि मुनि जी का ज्यर कुछ कम दोते ही ग्रीय था गहे हैं। इतनी स्चना कर देने पर भी पूज्य जवादिग्लाल जी म॰ ने तार दिलयाया श्रीर शीवता के लिए लिखवाया। तो क्या मुनि शी चौधमल डी म॰ सार्कल पर चढ्कर चले छाने ? मुनिकी वृत्ति है । किर पर साध को बखार था पेसी स्थिति में भी विहार करते हुए भा ही रहे थे। भौर फिर निम्बाहेडे पहुँच कर यह सभी स्थिति पृत्य जवादिन्लाल जी मन् से मुनि धी चीयमल जी मः ने स्राप्ट बक्तट भी कर दी थी। इतना सब होते हुए भी हितेच्यु मंडल हाग प्रशासित परोत्सव के 'निवेदन-पत्र' के पृष्ठ ४ पर लिखा गया है कि 'नियत तिथि को बाट ना दिन बीत क्षाने पर भी. मुनि धी चौधनल की महाराज नहीं पणारे"। हनका पेसा तिखना सन्याय संगत चौर द्वेप से पन्पूर्य है। भस्तु थी चौथमल जी महाराज मी करेडे से विहार कर

रापपुर गंगापुर होने हुए श्रीप्र ही पोस विज्ञे १२ शुरुपार को निम्पाहेड़े पथारे। पून्य ज्याहिरसात जी महाराज ने



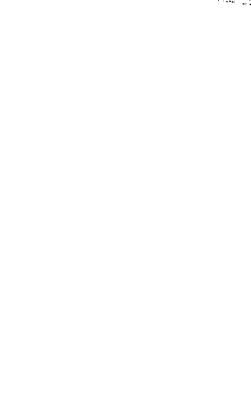


















































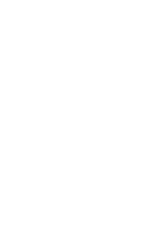








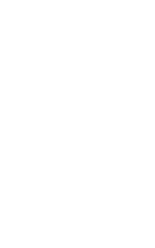


































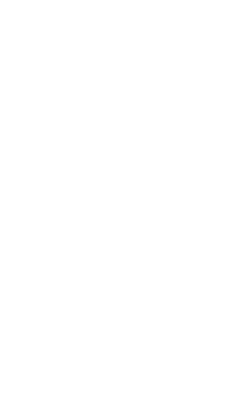




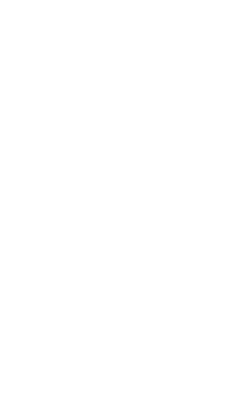






















मोट—इस लेख की एक नकल ताः २७-१-३४ को रजिस्ट्री एए जैन प्रकास में प्रकासनार्य भेज दी थी।

जावर से ज्ञामन्त्रल पत्र व दो भार ज्ञाप धे। उनके समा-बार सुन कर भावी पूज्य श्री खूबचन्द जी महाराज ने ता० १६-१-३४ को यह फरमाया कि—'पूज्य श्री ने स्पविरों की तथा मेरी सम्मति लिए दिना ही सुनि घासीलाल जी श्रादि बार सन्तों को क्षयवा निम्बाहेड़े में पूज्य श्री मसालाल जी म० के मुनियों का सम्भोग पृथक् किया जिससे साधु-सम्मेलन का १९ या नियम पूज्य श्री के हारा भैन हुछा। श्रादि रन सप पातों का समाधान य गुद्धि होकर प्रसिद्धि में न श्राव तय तक में क्या उत्तर हे सकता है ?

इसरी पात यह है कि मुनि घासीताल जी पूज्य धी नया मुनि धी गदेशीलाल जी के लिए जी जी जासेपजनक पर्ते कहते हैं उनका समाधान भी सम्प्रदाय के मुनियाँ की किटो द्वारा प्रथम होना भविष्य के लिए ठीक होगा। कौर यास्तव में ऐसा करना परम काव्ययक भी हैं।

उपरोक्त वानों के स्वप्टीकरण के परवाव् स्वविष् शुरू वी भी नन्दलात वी मान के समझ घाराघीरण वेषने के पार युवरात व ड्याच्याव साहि परिवर्ष की नियार्व करने की तिथि व माम निरिचन किय वार्षने।

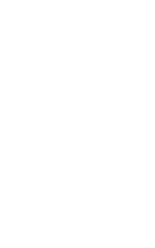
यदि इतने पर भी पूरव भी कपनी इत्यानुसार दी करना चाहते हैं तो मेरी उसमें हिल्लित भी सम्मति नहीं हैं।





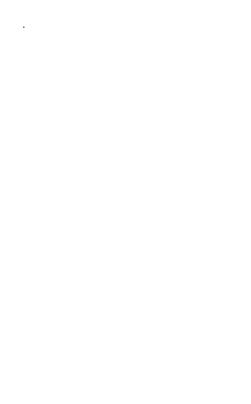


















हम मुनि थी ख़्यचन्द जी के श्राचार्य पद पर नियुक्त होने पर हार्दिक प्रसन्नता प्रगट करते हैं ।

थी संघ श्रजमेर

म्यावर से-- 17-2-3.

Jainodaya Pustak Prakashak Samiti Ratlam.

overjoyed being Maharaj Shree Khubchand ji appointed Pujyaji may live long.

-Kundanmal Lalchand.

महाराज श्री ख़ृयचन्द जी के पूज्य पद पर नियुक्त होने पर बड़ी प्रसम्रता हुई। महाराज श्री चढ़त दिन जीवित रहें— यह प्रार्थना है।

सेंड कुन्दनमल लालचन्द न्यावर

डर्यपुर से— 17-2-34 Master Mishrimal ji Ratlam.

Read telegram very glad by this news.

Shree Sangh.

रस ग्रम समाचार का तार पढ़ कर वड़ी प्रसन्नता हुई। श्रीसंघ उदयपुर

र्देदरावाद से--

17-2-34

Mishrimal master Jainodaya Fustak Praka-



क्यिक्ट्रेस सेंडेटरी श्रीमान घीस्तात जी सा॰ प्रमुख थे। क्ति स्तताम शाकर पूज्य थी खुवचंद जी महाराज की सेवा के निवेदन किया कि शाप अपनी ली हुई पूज्य पदवी वहीरह में मु'न मिर्धोतात की मानरता और संघ की शान्ति के लिए भें हरें। एउर धोरमृष्यंद जी महाराज ने षहा कि ठीक हैं हम मनी परविया छोड़ने के लिए तैयार हैं हमारे और पृत्य उद्मारातात जी में के सम्मोग हुटने के बाद जी हमारी तरफ एन पहने प्रादि हुई है यह, और पूज्य जवाहरलात जी मण में हुमार पेत करने के लिए सम्प्रदाय के सभी साधुकों की मामित दिना शिक्षा युवराज पद्वी दी है यह, इस प्रकार दोनी परों को फोर से दी गई पदविया वापन खींच ली जाँच बीर कित सम्बद्धाय में समय करते वे सिंद सभी मुनि मिल कर सर्वेत्रामित से भी गदेशीताल जी की युवराज पटवी को चहर प्रतान करें। इस में हम कैयार है। हम प्रकार के मार्थे का ते भी प्रकारण कर भी धीम्लात जी ने उपला र्मानारय समाभा । ये पूर्य भी की इस महान उदारला के लिए के दो हमन हम और बहते समें कि भाग है ज्याको भेपेला भीर ग्यामन्त्रीस को। भाव भारती पर्दावयों को सापस स्थित भेटें है। मानको सम् उत्तर-पृत्ति के नित्र मानको कोडिए। पत्यम् है। इस हो तो एमे हो हो । इस प्रकार सहीते मारे द्वार के श्रुतार प्रकट किये।

रिमा वे बरो में दूरव की उत्तरासार डीबरायर के चाम



































व्यवाद-रदोस्टब F 1881 1"

मा महार तिसना प्रेसिडेन्ट महोदय का अन्याय पूर्ण भर्तेहि पूर्व भी के सन्तों ने कोई भी विश्रति वर्सन नहीं ना। विस्तित वर्तन कियर से हुआ है ? इस विषय में हम

ित्व में पहले यहुत कुछ तिख चुके हैं किन्तु यदि पाउक हैंगे तो इस विषय में सप्तमाण विशेष स्पन्टीकरण कंत्रक करेंगे।

कार्य चलकर तिखते हैं कि 'धाराओरण के लिप स्तलाम

य समह फ्याँ होना चादिए ?" सिना स्वर्धीकरण क्रपर कर चुके हैं। फिर भी निवेदन है

हि रनताम में श्रवित भारतीय स्थाः साधुसमात्र में पूजनीय रेपेट्टड स्थविर गुरू जी विराजमान हैं। अतः इन महापुरुष र्घ रामारोप प्राप्त करने के लिए ही स्वर्गीय पृज्य भी ने रेगपोरः रतलाम में द्वी यांचने के लिए फरमाया था। किन्तु केर मी घपनी टेक रख के रतलाम झाकर भाराधीरण नहीं मेथे और समाज में कुट के अंकुर पैदा किय।

काने चल कर रही पैरेमाफ में लिखने हैं कि "धाराधीरच रिते करते कहीं मतभेद हुका होता और उतना हो खुलासा हेसी गृहस्य को रतलाम भेज कर मु॰ धी नन्दताल जी म॰ ता के पास से पुतासा सँगाते का अपद किया दोता तो

ोक था।" यस यही सी यात है कि गृहस्य की बीच में बासने का







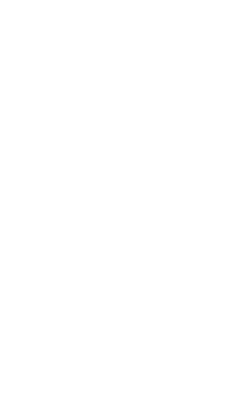


१२० मुवाचार्याद-पदोत्सव ब्रनेक प्रपंच रचने पहुँगे और ये इसी चिन्ता में शत दिन त्यस्त रहेंगे । कडिए, फिर धावकों का भला कैसे हो सकता है ? आगे चल कर लिखते हैं 'कि पँच के मेस्वर मृतिराज साहवों को मेरी विनंति है कि जयपुर के श्री संघ के पास से श्रयवा थी दुर्लम जी माई जीहरी को खाश कर के महागत श्री चौयमल जी शीर मासीलाल जी को शांति के सन्देश भेजें श्रीर एक्य प्रयत्न करने की सूचना करें।" पाठको, देखा प्रेसिबेन्ट सा॰ के लिखने का दंग ? जब संघ में शान्ति दोने के लिए पंच मुनिराजों की तरफ से प्रेसि हेंद्रसा० के पास पत्र गया तत्र शुमनाम, श्रपरिचित व्यक्ति बादि

कद्व कर टाल दिया और ऊपर लिखने हैं कि शानित का सन्देश भेजें। पाठक स्वयं निक्कर्ष निकालें कि गफलत और लापरपादी किसकी तरफ से हुई ? मुनि श्री चौधमल भी

पक कमेटी नि धी

नो '





भाग्यशाली मन्दसीर में युक्तन्द्रायक्ति-पद्गेत्स्य मङ्गलाचरण

(१)

नेता नीतिविदां सुभाषितवता विद्वन्मुनीनां च यः । निर्मानः समलद्वत्रोति सततं तीर्थैः प्रदत्तं पदम् ॥ भोतृषां मनसां भ्रमं विधुनते सर्वे सुषा स्किभिः । पूज्यः पूज्यवरः सदा विजयतां भी सूयचन्द्रो सुनिः ॥ (२)

उत्सार्हं वर्षयन्नित्सं प्रमोदं प्रथयत्परम् । छगनलालमुनिर्मान्यो भूयाद् भारतमण्डले ॥

(३)

प्रभुचरण पवित्रे लोक विश्रुत चरित्रे l प्रतिपदमभिरामे मन्दगीराख्यमामे ॥ छुगनमुनिवरस्य धर्मीनश्ठापरस्यं । समभवतिरम्यो यौवराज्याभिषेकः ॥

(8)

महोत्सवेऽस्मिन् श्रमणािः प्रप्ते । जनाः समागुः स्वजनैः समेताः ॥ समे युवाचार्यमुखं निरीच्च । भूवना े . . जित्रव ॥ २२ <u>मृत्त्रवावीरि-व्यत्त</u>्व वर्षा के विरोध का अस्ताय पास किया। इस प्रपृत्य की ज्ञालाल तो सारक सारा न कारकों का विदेश्या का रणा इसके आस्तातन सारवंशी आस्त्र आसीर, क्यार्ग, नगर नावस सार्वास लगस्य कार्ति प्रमानी बाहरी के विरोध सारा सारा सार्व सार्व प्रसान कार्त्य कार्ति पर सी

हमा कार रास रासाई पहेंगानक कि कासने क्राव्यस्थिति है स्टब्स कराइ राज्या रासा कहना साक्ताहरू साद्धी द्वारी रेड्राचन का सामारास पुरस्य यन का विकास सिद्धी

- 1.700 ·

न पत्र कार रंग के रूप के उपनाय पास किया हो। स्टर्थ

भाग्यशाली मन्दसीर में युकाचायादि-पदे।त्सक मङ्गलाचरण

(3)

नेता नी तिविदो सुमाधितवती विद्वन्तुर्नानां च यः। निर्मानः समलदसेति स्टर्त तीर्थैः प्रदत्तं पदम् ॥ भोतुरां मनशं भ्रमं विश्वनते धर्वे सुधा स्टिप्नेः । पून्यः पून्यवरः स्टा विवयतां भी सूरचन्द्रो सुनिः ॥ (२)

उत्लाहं दर्धनिकतं प्रमोदं प्रयपद्वरम् । हानतालहानिर्मान्यो भूराद् भारतमञ्डले ॥

(3)

प्रभुक्तर पतिने सोक विभूत करिने । प्रदिग्दमभिताने मन्द्रभौराज्यमाने हुपनदुनिवस्त धर्मनिष्ठापरस्यं स्यापनितन्त्री यीवराज्यानियेका 11 (8)

महोत्तवेऽस्तिन् मनराहिष्म पूर्व । बनाः हमापुः स्वबनैः हमेताः॥ हमे स्वाचार्यद्वासं निर्देहर । **स**म्बनाहेल्फ्नर्तिताह्व



सरने हे निय प्राप्ता केंग्रा सन्त्रांत की की ने हाने रूप है अर्थन विकासित साम का हिन्द्रीन हार्य हा जिल्ला कर काल की की दूसरी नाम की प्रश्नीत हाल के लिला काला अन्य हुआ है है का काला जानियों ने उद्योग किया है है

22.5

The state of the s

The state of the s

TO ARREST AND ATTER THE ATTER THE ARREST AND ATTER











- (११) भी भेरक वर जी म॰ (१६) भी ॰ सीमागक वर जी म०
- ((उ) , शंमुकुंबर जी म० (१=) ,, शीलकुंबर जी म०
- (११) , केरारकुंबर जी म० (२०) ,, चतुरकुंबर जी म० (२०) ,, मुन्दरकुंबर जी म०

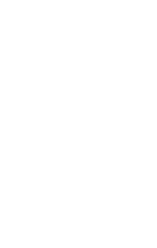
(२३) थीं राजमित जी म॰

रस प्रकार समस्त मुनि और महासितयाँ जी १०१ महो-स्सव में उपस्थित हुए। माघ शुक्ता १० से उदयपुर, यहीं साददी, निम्बादेश, महागढ, संजीत, जावरा आदि शहरों से सगमग १०० स्वयंसेवक सेवामाव से प्रेरित होकर आए हुए थे। रन सब की पोशार्के यही सुन्दर थीं। हैंसमुख चेहरा और उमहता हुआ हदय—यस एक सुशील स्वयंसेवक के लिए और चाहिए ही क्या ? मृग के पास कस्त्री है, यही यहत है।

मुनि श्री के ध्याख्यान माघ शुक्ता १० से ही उपरोक्त पराइत में प्रारम्भ हुप। माघ शुक्ता १० के पहले से ही दर्श-नार्थियों का आना प्रारम्भ हो चुका था। माघ शुक्ता ११ के दिन ध्याख्यान में आई हुई जनता का हृदय देख कर चिन्ता होने लगी कि लोग कहाँ येंडेंगे १ इतना विशाल परहाल होने हुप भी उस में जगह कम पह रही थी। हाँ, पराइत के आस-पास खुली जगह और लम्बे-चौड़े प्रांगय हैं—यहाँ चैठ आयंगे।

रतलाम से स्पेशल ट्रेन।

माप ग्रक्ता १२ को रतलाम से एक स्पेशत ट्रेन वहाँ के







\$

1

ł

पृत्यभी पर्व घाँदला के विद्यार्थियों का मंगलाचरण हुआ। ^{तद्}नन्तर मुनि क्षियों की स्त्रोर से मंगलाचरण हुस्रा। फिर रामपुरे के विद्यार्थियों का खोर स्थानीय पाठशाला के छात्रों का 'वेलकम' (Welcome-स्यागतम्) दूममा एञ्चा । इसके पाद मुनि धी शस्तूरचन्द जी महाराज ने अपना वक्तव्य दिया। फिर ^{स्पानीय} पाठशाला की केसरिया रंगकी साढ़ी घाली ११ रातिशयों ने मंगलाचरण किया। तत्परवात् प्रसिद्ध वक्ता ^{एं} मुनि धी घीथमल जी म॰ सा॰ ने शाचार्य, उपाध्याय, गर्मी, प्रवर्तक आदि पदाँ की जिम्मेदारियाँ पड़ी शृपी के साथ अपने वकत्य में फरमाई'। धोता प्यान पूर्णक सुन रहे थे; पर यिराट् क्षन-समृद्द के कारण सघ लोग नहीं सुन पाय। उस समय सोगों की भाषना हो उठी कि यदि लाउडस्पीकर (रेडियो) का प्रकार दोता तो ज्ञाज सभी लोग अच्छी तरद सुन पाते। सुनि धा के स्वाल्यान पूर्ण दोने के पश्चात् पूज्य मुनियाँ के, थीं संघों के, प्रतिरिक्त धीमानों के शौर राजा-मदाराजायीं के साप दुप शुभ सन्देश धी-जैनोदय-पुस्तक-प्रकाश-समिति, रत-लाम के अवैतनिक मंत्री धीमान् मास्टर मिधीमल जी सा॰ ने पदं कर सुनाप।

ञ्चाए हुए शुभ-सन्देश । कविवर्ष पं॰ मुनि भी नानचन्द्र जी महाराज का

युभ-सन्देश-

"x x x द्वाज जैन जनता विरोदनः साधु मार्गीय



श्विभी एवं थाँदला के विद्यार्थियों का मंगलावरण हुआ। व्यक्तिर मुनि सियों की और से मंगलावरण हुआ। फिर रामपुरे के विद्यार्थियों का झौर स्थानीय पाउरााला के छात्रों का 'नेत्रहत' (Welcome स्वागतम्) ड्रामा एझा। इसके बाद मुनि भी कस्तूरचन्द जी महाराज ने जपना वक्तव्य दिया। फिर स्पतीय पाठशाला की केसरिया रंगकी साड़ी वाली ११ कतिशक्ता ने मंगलावरण किया। तत्वश्वात् प्रसिद्ध यक्ता रंः सुनि भी चौपमल जी म॰ सा॰ ने खावार्य, उपाप्याय, गर्जी, म्बर्चक सादि पदों की जिम्मेदारिया यही स्तृषी के साथ सपने वटाय में फरमाईं। धोता प्यान पूर्वक सुन रहे थे; पर विराट् डनसमृद्ध के कारण सब लोग नहीं सुन पाए। उस समय सोगों की भावना हो उठी कि यदि लाउडक्पीकर (रेटियो) का भरन्य दोता तो आज सभी लोग अच्छी तरद सुन पाने। हिने भी के स्पारमान पूर्व होने के पश्चात पूच्य मुनियाँ है, भी खंघों के, प्रतिस्थित शीमानी के और राजा-मदाराजायाँ के काय हुए गुभ सन्देश धी जैनोदय-पुस्तक-प्रकाध-समिति, रत-लाम के अवैतनिक मंत्री धीमान् मास्टर मिधीमल डी सा॰ ने पड् कर सुनाय।

आए हुए शुभ-सन्देश । कविवर्ष पं॰ मृति भी नानपन्त्र वो महाराव का

सुम-सन्देश—

"xxxकात जैन जनका भीर विग्रेयक साथु मार्गीय

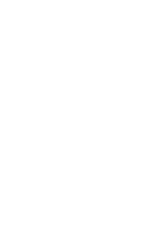


स्व भी पर्व थाँदला के विद्यार्थियों का मंगलावरण दुआ। क्कतर मुनि कियों की स्रोर से मंगलाचरण हुन्ना। फिर यमपुरे के विद्यार्थियों का और स्थानीय पाउदााला के सात्रों का 'वेतहम' (Welcome स्वागतम्) हामा हुआ । इसके बाद मुनि धी कस्तूरचन्द जी मदाराज ने अपना वक्तव्य दिया। फिर स्पनीय पाउग्राता की केसरिया रंगकी साढ़ी वाली ११ रातिश्चात्रों ने मंगताबरख किया। तत्यस्वात् प्रसिद्ध यका र्षः सुनि धी चौधमल जी म॰ सा॰ ने साचार्य, उपाध्याय, गर्छी, भवतंक आदि पदाँ की जिम्मेदास्यिं यही खुर्य के साथ अपने हत्त्व में फरमाईं । स्रोता ध्यान पूर्वक सुन रहे थे; पर विराट् डन-समृद्द के कारए सब लोग नहीं सुन पाप। उस समय होगों को भावना हो उठी कि यदि लाउडस्पीकर (रेटियो) का म्बन्ध होता तो आज सभी लोग अरदी तरह सुन पाते। हुनि भी के स्याच्यान पूर्व होने के परवात पूज्य मुनियाँ के, भी संघों के. प्रतिस्थित धीमानों के और राजा-महाराजायीं के भार हुए गुम सन्देश धी जैनोदय-पुस्तक-प्रश्रय-समिति, रत-लाम के रुवैतनिक मंत्री शीमान मास्टर मिधीमल जी सा॰ ने पड़ कर सुमाय।

ञाए हुए शुभ-सन्देश।

कविवर्ष पं॰ मुनि श्री नानचन्द्र दो महाराज का सुम-सन्देश---

"xxx काल जैन जनता और विशेषकः साधु मार्गीय



साहित्य श्रेमी एँ० राल भी प्यारवन्द सी महाराज से सैन ज्या ख्य परिवित है उनको गोए-पद का भार प्रदान करना में सुबंगत है।

्रांची प्रकार घोर तपस्वी धीमान् मोतीलाल जी महाराज तपा रें रत्न धी हजारीमल जी महाराज रन दोनों महातु-भागों को प्रवर्तक पद समर्पेट होता है। उसकी भी हम अनु-भीरता करने हैं। जीर उन सभी मुनिराजों को अपने अपने पद का मार यहन करने की अधिक-प्रधिक शक्ति प्राप्त हो। और इनके पुनीत हस्तों से सम्प्रदाय के और समाज के अधिक-स्थिक सेवा-कार्य हों। येसी सम्भावना रखने हैं।

प्रेपक - बद्दील दुगनलाल सरमीवन्द, नवसारी।

×

×

×

भारत-भूषण त्युग्रतावधानी ५० मुनि थो मीमान्य-षन्द्र भी महाराज का ग्रुभ-सन्देश--

"x x x यह पहुंत पुर्ण जानेह का समाधार है कि उपर्युक्त सुन्यतित्यों को उन्दुक्त परिवर्धों हो जा नहीं है। x यह कार्य जिस नगर में होता है उनका पन्य भाग्य समभने हैं। जीर यह मंगलावार्य कार्य हाति पूर्व सफल हो जाने की कामना रखते हैं। जाता है कि उन्दुक्त पहुंची के सन्योग्य सुनियंज प्रवासी पूर्व की सुवालाल जो मक



स्पित नहीं हो सकता हूँ। हमारी सम्प्रदाय के प्रवर्तनी जी भी रन्ता जी महासती जी ठा॰ ३ सहित इस सुरुवसर पर प्यार रहे हैं। इस पदोत्सव में हमारी पूर्ण सहातुभूति जीर सम्मति है। XXX"

x x x

प्रवर्षक वयोष्ट्य स्यविर मुनि श्री द्यालचन्द्रजी म० का सुम-सन्देश----

"x x x म्यावर से धी कालूराम जी कोठारी के मार्फत दुवाचार्य-पदोस्तव की खास जामंत्रच पत्रिका मिली। पदने से कति इपंप्राप्त दुजा 1xxx"

प्रेपक-जैन वर्डमान समा समरही (मारवाह)

ा आयुक्तवि पंडित रत्न मुनि श्री षात्रीहाट डी म०

और घोर तपस्वी श्री मुन्दरहाठ डी म॰का ग्रुम-मन्द्रेय-

"xxx रहा दी दर्ष का विषय है कि शान्त दांत राखविराद भी १००= भी मण्डेनाचार्य पृष्य भी र्यचन्द जी मण्डे पट पर भावी जाचार्य भी भी १००= भी र्यमन्तात जी मण्डे पट पर भावी जाचार्य भी भी १००= भी र्यमन्तात जी मण्डनाय जायेंगे। १घर "स्व" कर्यात् निर्मंत चन्द्र साजात् "स्वचन्द्र जी पृत्य है।" निर्मंत चन्द्र की निर्मंत कान्ति विक्रमित दोने से कनेक क्षमुद्दन्त विक्रमो है। किर मञ्जू कृत बातायाय कुमुद कार्दि की वृद्धि करता है देसे मार्या



हात जी म॰ को दी जावेगी सो कत्यानन्द की यात है। ×××°

भेपक—भी मोतीलाल श्रोस्तवाल, × × × ×

थीमान् रायवहादुर सेठ विरदमल जी गाड़मल जी चोरा अजमेर का गुभ-सन्द्रेग्नः—

"x x x स्वामी जी भी १००= भी दगनतात जी महाराज ने मार सुदी १३ शनीवार ता० १६-२-३४ ने युवाचार्य-१द-पदान रोवाका ग्रभ-कवसर पर कावा की कार्मकरा पिकका कार्र सी पुगो हो। हमको तकलीक रोवा से शरीक होवा में मजवूरी है सो जाएसी। हमारी यन्द्रना माद्रम करायसी। xxx"

× × × × × × × × × भीमान् सेठ सागरमठडी नधमठडी हुँ कई डटगाँव । (र्घ सानदेश) का सुम-मन्देश—

"सापका गुम स्वामन्त्र पत्र मिला। बड़े हुपँ की बात है कि मन्दसीर सरीखी तयी भूमि में युवाधार-पर की बहर प्रदान का महीत्सव होगा। सीर एस गुम कार्य में देन समाज की सबस हुप होगा। में भी दग हुम स्वयस पर तकर काता लेकिन मेरे पुत्र की शादी निष्यत हो जाने से में काने के तिस समाय ही। इसलिय में इन्होंग हुक्यतसे मुनीमकों को मेनूंगा सो बिदित हो। में नहीं का सकता इसलिय बहुत दिलगीर हैं सीर इसलिय मान्ने बाहता हैं। ४०००















्धीमान् साला ज्यालामखाद खी खा॰ ने कानीङ् (पटियाला स्टेट) से ता० १४-१२-३४ को जो तार भेखाया यह इस प्रकार है--

To

Jain Sangh Mandsaur.

Unable attend, Wish Success,

चर्णात्-द्याने में धसमर्थ हैं। कार्य में सफलता पारता हैं।

भीमान सेड लालचन्द्र जी बोटारी स्वायर से जपने नान्द्रस-२-३५ के मार में लिखने हैं--

Congraturatous on Yuvarajship Sorry could not attended to the second

चर्यात्—युद्यात्र सहीत्सय पर बर्ध्यः। सेह है कि से समय में सिम्मितित व हा सन्ता।

शीमात संद प्यांत्माण्डा साथ ग्रजमेर भी गार्ने १६-३-३३ वे नार में क्रियां ई-

Francisco do Malabado, Ilaboldo William

कर्णम् १०१८च । सम्मित्तन् व द्वीराषा यत्रदर्व एकः कारता हो। श्रीर काम्य इन सम्मनुष्ये स्थितवास्ता हो।



san ctioned

मर्यात्—मुक्ते खेद है कि छुट्टी मंजूर न होने के कारण मैं र्यास्पत नहीं हो सकता।

×

•

भीमान् घोँड़ीराम जी इलीचन्द जी पूना से अपने सा०१४-भी। के नार में लिखने हैं—

Unable to attend Mahotsaw. Wishing every

वर्षात्—महोत्सव में सिमिलित होने के लिए असमर्थ । १८ प्रकार से सपलता चाहता हैं।

х

भीमान लाला गोनुलयन्द की सा० औदरों देहली से स्वयने कार १३-२-१४ के लार में लिखने हैं-

Being marriage here cant attend.

मार्थोत्—यहाँ पर विवाहीत्सय होते के कारण में उपस्थित गरी हो सकता।

*

ì

Lam to octors. His Highmos's thunle to you for your had telegram detal the tech







री आप्रद किया था; किन्तु मुनि धी ने अस्वीकार किया। फिर भी रस युवाचार्य पदादि महोत्सव के श्रवसर पर पूज्य भी ने पर्व मुनि-मरहत ने प्रसिद्धवक्ता पं॰ मुनि भी चौयमल जी म॰ से ऋत्याप्रह कर "जगद्वल्लभ जैन दिवाकर" की पद्यी स्वीकार कर लेने के लिए कहा और फरमाया कि हाँ, आपका प्रभाव जैन-जैनेतर समाज में पदवी घारियों से भी कई गुए। विशेष है। अतः आपको पद्धी दे देने में प्रभाव बढ़ाने का हमारा भ्येय नहीं है। केवल आए जैसे जैन-धर्म के महान् प्रभाविक पुरुषों को पदवी से सुशोभित करना मेरा धौर मुनि-मर्टल का परम कर्त्तःय है। इसलिए इस पदवी को तो शव श्राप शबहय स्वीशर करें। इस प्रकार की सदर स्थानीय भी संघ की ज्ञात दोते दी यह संघ इस शुभ सन्देश का समर्थन करता हुझा चतुर्विधि थी संघ को इर्ष-वर्धा का यह समाचार पहुँ बाता हुआ इतहत्य होता है।

> भवरीयः— धी रवे॰ स्वा॰ जैन धी संप मन्दतीर (मातवा)

उपस्थित साथु साध्यो धायक धाविका चतुर्विष धी स्वयं ने एक स्वर से सभी पद्दियों का समर्थन किया तुमुत उप-ष्यिन से परवाल गूँज उठा। सभी के बेहरे पर प्रसम्पदा की कपूर्व स्विष् पी। धीमान पंडित सुस्त-नुनि जी महागज के निम्बोक्त मुदारिकवाद की कविजा पट्टने के परवाल् जरुयानि







डररत मोटिंग हैं। उपमें प्रस्ताव तो यहत हुए; परन्तु रह स्ताल प्रस्ताव यह था कि शान्त्रेंस के प्रेसिडेन्ट भी रैनबन्द भार्र ने उपोद्धात सींच लेने के लिए संस्था भी स्वना-री भी। उसी के मुताबिक्ष उपोद्धात सींच लिया गया।

माय गुमला १४ को उसी विद्याल प्रश्वाल में स्वारपान हुमा (स्पारपान की समाध्ति पर सरपायिया म॰ ने इस तरह भाषा हिया—

प्रियशद प्रयोज्य धीमान् स्वयन्त् जी म॰ साहव तथा मित्र बता मुनि भी चीचमल जी म॰ सा॰ तथा उपस्थित पुनि-मत्रवत, दिय बन्धुक्षी, मानाक्षी य बहिनी, बाद का दिन रहा मंगलमय, पांपव पर्व गुहापना है जब कि मुकाम हूर-रणक से भारं, यहन तथा मानाये प्रयाबायोदि-पदीत्सय नया मुनिधियों के दर्शनार्थ साकर यहें। समितित इस है। रेना राभ बयमर शिर्मी में मिलमा चायन दुर्वन है जिसके लिए मुक्ते चल्रहद कार व तथा हर्ष पेदा हो रहा है और हमी पुर्णे में बुद्द बोलने का काइस कर पदा हूं। सहाजी, में ल मो पाया हो हूँ कौर व हुए प्रदारितया ही हैं: त्यादि हुई-कुई दी-चार शुम्द सारको सेदा से साहराष्ट्रिक सर्व करना-साहरा हैं। मुने बादा है, बाद हैनवर् बहर बर बहुदृहीत करेंदे। माय शोहत मार्चा होते पर एका की बरेंचे। हैन धर्म के मार्गि तीर्वहर भी एउमरेंब की में हेवर स्थित लेके 'बर भी भगवाद महायोग दर्यन जिनके भी नीर्यक्रम हुए हैं



जनरक मीटिंग हुई। उपमें प्रस्ताय तो यहन हुए, परानु एक शास प्रस्ताय यह था कि पान्मेंस के मेसिसेन्ट थी देमचन्य भाई ने उपोद्धान सींच केने के लिए संश्वा थी स्वता सी थी। उसी के मुताबिक उपोद्धान सींच लिया गया।

माय ग्रहता १४ की उसी विद्याल प्राहाल में स्वास्थान हुआ। प्राह्मणा की समाध्य पर सरवादिया में वे इस तरह भाषण हिया—

पुल्पगद् पयोष्ट्रद्र धीमान् सृष्यन्य श्री मः साद्य तथा मिनम पना मुनि धी चीचमल जी में बार तथा उपरिचन पुनि-माटल, दिव बापुत्ती, माताब्दी व बहिनों, साल बा दिन ^{द्रा} मंगलन्य, परित्र पर्ये गुरावता है। उर कि गुकान हुर-रणप्र से आरं, रहन मधा मानावें घुवाबायोदि-वही ज्वय नया मनिधियों वे दर्शनार्थ साकर यहाँ। स्वीम्सीतन ह्या है। रैंका राभ भएका शिद्यों में मिलका भाषात पुरुष है जिसके लिए गुमें चल्दर सार र तथा हर्ष देश हो रहा है सौंप हली पुर्ण भे कुर दोलते का शाहल कर रहा हूं । क्लानी , में क मी बना हो ही झीर व मुश्च बद्धित्वत हो ही, मदाबि हुटे-सूटे दी-बार कथ् सार्का रेस में कार्यपूर्व सर्व बरक नाएक है। तुभे चारा है, बार हंतवन् पहर पर बाहुएकेर करेते। राप्त हुरे कुछ कलको होने पर एका की परेते । हीक अर्थ के बादि तर्ववर भी प्रान्ति में है हैक प्रतिना नीते. 'बर को बारचार सरायोग यहाँ र किन्छे हो। नोहंबर पूर्ण है





